दलितों पर अत्याचार

डॉ० श्रीमती तारा सिंह

प्रभु ! तुम सारे जग के भाग्य विधाता, देवों के देवता
प्रीति मौन, प्रति उर में रहकर तुम स्पंदन करते
चिर श्रद्धा के रथ पर चढ़ाकर, तुम विपथगामियों
को भी अपने घर तक पहुँचाते, तब भी
तुम्हारे इस विश्रांत विश्व का रथ,महाकाल है खींचता
मनुज, मनुज को अछूत, दलित, चमार पुकारता

नित ब्राह्मणों के कदम आघातों से होता मर्दित
शास्त्रों का ओट लेकर करते इनको लांक्षित
हम जानते हैं, कर्म हमेशा देवों से होता पोषित
क्योंकि देवों का हृदय , सागर समान होता विस्तृत
पर जो मानव शत कर्मों को छोड़,पाप करने में रहता रत
सहोदर को अछूत बताकर, पूरा करता अपना मनोरथ
अनिल ,जल- थल,हवा,पावक,सब पर जताता अपना हक
ऐसे क्षूद्र इंसानों को जनम देकर,तुमने क्यों बढ़ा दिया है
कमजोर , दलित वर्गों का दुख - दर्द

युगों-युगों से प्रतारित होता आया,इस धरती पर दलित
आज भी नहीं बदला इनके प्रति घृणा की आकृति
घोर भ्रांतियों के युग में यह भी एक निर्भ्रांत सत्य है
कि धार्मिक व्यक्तित्व वाले, विगत समाज की कुरीतियों
को दूर कर, बिखरे लोगों को कर न सके संगठित

आज हम हिन्दुस्तानी, दुनिया मे कहलाते महान
क्योंकि एक छत के नीचे रहते हैं हम मिलकर
हिन्दू, सिक्ख, ईसाई और मुसलमान
सबों का है एक नारा; हम तुम्हारे ,तुम हमारे
रुधिर का रंग एक है, एक है हमारा संस्कार
एक कर्म है,एक देश है,हम सभी एक माँ के हैं लाल

व्यर्थ होगी ऐसी सहृदयता की बातें करना
जहाँ बँटे हुए हों लोग, जाति और धर्मों पर
हम बाहर से कोमल दीखते,भीतर है हमारा क्लिष्ट
दैन्य - दौर्बल्य पर पत्थर फेंककर
करते अपने पशु - मन को खुश
पुण्यभूमि हमारा देश तो तब कहलायेगा
जब हम सिद्ध कर यह दिखला देंगे
हम एक हैं , एक है हमारा मन इष्ट

शास्त्रों की बात जब लगे न ठीक, तो त्यागो उसे भी
क्योंकि लिखनेवालों के मन में भी होते हैं भेद
वे भी मति के प्रतिकूल होकर करते हैं बड़ी - बड़ी भूल
तुम अपनी बुद्धि का शरण लेकर, उसे करो उपकुल
बड़ों के द्वारा बताए गए मार्ग,तभी होना चाहिए स्वीकृत
जब हो वह सर्व-धर्म प्राणियों के हितों के लिए परिष्कृत
आँखें बंदकर मत खींचो लीक, देखो तो कि बैठा ठीक

यहाँ कोई किसी के लिए बड़ा -छोटा नहीं होता
छोड़ो , त्यागो अपने क्षुद्र हृदय की दुर्बलता
डरो मत, डटे रहो, अपनी दूरदर्शिता के समक्ष
क्योंकि जीत सदा खड़ी रहती है,आत्मा के पक्ष
देश, काल, स्थिति से मत रहो अनजान
उठो अपनी व्यवस्था के अनुसार और करो
अपने नव विचारों का आह्वान

हम सवर्ण हैं, शुद्ध हमारा लहू, पवित्र हमारा धर्म
तुम असवर्ण, भ्रष्ट तुम्हारा खून,अपवित्र तुम्हारा चर्म
मत सुनो ऐसी पशुता की बातें,करते चलो अपना कर्म
पशुओं में होती है जाति - पाति, हम मनुज हैं
हमारे पिता एक हैं, एक है हमारा मनुष्य धर्म